Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

प्रवासी साहित्य में नारी पात्र

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

प्रवासी साहित्य में नारी पात्र

Nirmala

Assistant Professor, Seth Navrang Ram Manohar Lohiya, Jay Ram Kanya Mahavidhyala, Lohar Majra, Kurukshetra

---------------------------------X---------------------------------

प्रवासी साहित्य से तात्पर्य उस लेखन से है, जिसकी रचना अपने घर से दूर हुई हो चाहे वह विदेश में हो या अपने ही देश में किंतु घर से दूर। वास्तविकता में प्रवासी शब्द का अर्थ है–विदेश गमन, विदेश यात्रा। एक तरह से प्रवासी वे कलमें हैं जो अपने पेड़ से कटी हुई टहनियाँ होने के बावजूद बरसों–बरस किसी और मिट्टी–खाद–पानी में अपनी जड़ें रोपती हुई अपना बहुत कुछ खोने और नया बहुत कुछ उस भूमि से लेने–पाने के साथ अंदर की गहराइयों में नई ऊर्जा सृजित करती हुई चेतना की कोंपलें विकसित करती है। एक समय था जब प्रवासी हिंदी साहित्य सिर्फ उन लोगों के द्वारा लिखे गए साहित्य को कहते थे जो 173 वर्ष पूर्व शर्तबंदी के तहत मॉरिशस, फिजी, त्रिनिदाद और सूरी नाम छलावे और भुलावे से ले जाए गए थे। गिरमिटिया लेखन असीम यातनाओं, संघर्षों दासतानों और क्रांति की कहानियां थी जो अभाव में थे, विवश थे जिसमें मिरमिटिया क्रांति की सफलता–असफलता का इतिहास था।

आज का प्रवासी हिन्दी साहित्य उन सभी कलमकारों को समेटता है जो विश्व के विभिन्न देशों से बेहतर भविष्य की खोज में, बिना किसी दबाव या शर्त के गए थे। उन्होंने वहाँ की नागरिकता प्राप्त की। उस देश के जनजीवन से परिचय बढ़ाया, उसे समझा, जाना, अनुभव किया, भोगा और जीया। उन्होंने देश के खट्टे–मीठे स्वाद को हृदय में संजोए नए देश के रीति–रिवाज से समझौता करते जीवन की नई राहें निकाली। योरोप, अमेरिका और इंग्लैण्ड देशों में रहने वाले रचनाकारों का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। पिछले 15–20 वर्षों में जिस तेजी से इंग्लैण्ड, योरोप और अमेरिका में हिंदी लेखन हुआ है, वह मुख्य उपलब्धि है। आए दिन हिंदी–संगोष्ठियों, सम्मेलनों में हिन्दी साहित्यिक विचारों का आदान–प्रदान होता रहता है। साहित्य के रचनात्मक अभियान के तहत प्रवासियों के हिन्दी की कई वेबसाइट्स व वैब मैग्जीन जैसे अनुभूति, श्रद्धांजलि, अन्यथा आदि विकसित हुई हैं। लंदन से पुरवाई, ओसलो से शांतिदूत व स्पेल दर्पण पत्रिकाओं का संपादन व प्रकाशन प्रवासियों को भारतीय लेखकों से जोड़ने के लिए हो रहा है।

प्रवासी साहित्यकारों की कोटि में अभिमन्यु अनत, डॉ. अचला शर्मा, अर्चना पैन्यूली, अनिल प्रभा कुमार, इला प्रसाद, उमेश अग्निहोत्री, उषा राजे सक्सेना, ऊषा वर्मा, डॉ. कृष्ण कुमार, कृष्ण बिहारी, जगमोहन कौर, तेजेन्द्र शर्मा, दीपिका जोशी संध्या, महेन्द्र ट्वेसर 'दीपक', पूर्णिमा बर्मन, राजश्री, श्याम नारायण शुक्ल, सूक्ष्म बेदी, सुभाष कुमार घई, ऊषादेवी विजय कोल्हटकर, गौतम सचदेव, अश्विन गाँधी, तोषी अमृता, नरेश भारतीय, पुष्पा भार्गव, वेदप्रकाश 'बटुक', कादम्बरी मेहरा ऐसे उल्लेखनीय नाम हैं जो विदेश में रहते हुए भी मानवीय संवेदनाओं को अपने साहित्य में उकेरने में सफल रहे हैं।

'हम विभिन्न भाषाएँ' बोलते हैं, हम विभिन्न धर्मों को मानते हैं, हमारे रीति–रिवाज अलग–अलग हैं। हम सौ करोड़ से अधिक भारत में तथा पच्चीस करोड़ से अधिक सात समंदर पार लगभग 110 विभिन्न देशों में बसे हैं, लेकिन एक विचार है जो हमें आपस में बांधे रखता है, वो है 'भारतीयता'–डॉ. मनमोहन सिंह।

डॉ. वेदप्रकाश 'बटुक' कहते हैं–'प्रवासी हिंदी लेखन मेरे लिए एक नई संवेदना, नई चेतना, नई उत्तेजना देने वाला वाक्यांश है। जब से मैंने लिखना प्रारंभ किया, तबसे अपने आपको हिंदी लेखक समझा।'

'यही पाओगे महशर में जबाँ मेरी बयाँ मेरा,

मैं बंदा हिंदी वालों का हूँ, खून हिंदी जात हिंदी,

यही मजहब, यही फिरका, यही है खानदाँ मेरा'

मैं इस उजड़े हुए भारत के खंडहर का ही जर्रा हूँ,

यही बस एक पता मेरा, यही नामोनिशां मेरा।

(वर्तमान साहित्य, कुंवरपाल सिंह)

प्रवासी साहित्यकारों के विस्तृत रचना संसार को इस शोध–पत्र में समाहित करना दुष्कर होगा। मैं तेजेन्द्र शर्मा, गौतम सचदेव, जगमोहन कौर, अनिल कुमार प्रभा, ऊषा देवी कोल्हटकर, दीपिका जोशी संध्या, डॉ. कृष्ण कुमार, ऊषा राजे सक्सेना साहित्यकारों की नारी जीवन से संबंधित संवेदनाओं पर प्रकाश डालना चाहूँगी।

1. ऊषा देवी कोल्हटकर :

ऊषादेवी कोल्हटकर की कहानियों में स्त्री और बच्चों की उपस्थिति अनेक सवाल उत्पन्न करती है। आपकी कहानियों में अमेरिकी जीवन पद्धति और मूल्यों को रखने का जो उपक्रम दिखाई देता है, वह सराहनीय है। ऊषा देवी की कहानियाँ हमें अमेरिकी समाज को समझने में सहायता करती है। भोगवादी सभ्यता की परिस्थितियों को यहाँ बेलॉग ढंग से प्रस्तुत किया गया है।' अमेरिका समाज में **पाश्चात्य रंग में रंगे नारी पात्र** देखने को मिलते हैं। 'सरोगेट मदर' में सिंडी नामक वेश्या के जीवन की परिणतियों को देखा जा सकता है। पहले सिंडी नेलपॉलिश और कोल्डक्रीम के इश्तेहार के लिए हाथों की मॉडलिंग करती थी और कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य में बी.ए. कर रही थी। मॉडलिंग के व्यवसाय में बढ़ती स्पर्धा उसे

www.ignited.in

जीने के लिए पर्याप्त पैसे दिलाने में असमर्थ साबित हुई, इसलिए उसने वेश्या का जीवन अपना लिया। वह एलन से एक साक्षात्कार में कहती है। 'एलन मेरा व्यवसाय एक शो बिजनेस है। शो वूमनशिप के लिए जरूरी सारे तंत्र मैंने सीखे हैं। कम से कम मेहनत में भरपूर पैसा कमाना प्राथमिक उद्देश्य और अब तुम्हीं सोचो, इस वक्त मेरे पास जो मोस्ट एक्स प्लॉयटेबल कमॉडिटी है, वो है मेरा शरीर। जिंदगी के चंद क्षणों की मैं बॉस हूँ। पुरुष पूरी तरह अपने बस में है। मिन्नतें कर रहा है। इस भावना का अनुभव हर स्त्री को उचित लगता है।' (सरोगेट मदर, ऊषादेवी)।

सिंडी को जब देह व्यापार में संकट दिखाई देता है तो पच्चीस हजार डॉलर में अपना गर्भाशय किराए पर दे देती है। सरोगेट मदर हो जाती है। अमेरिकी संस्कृति ने मातृत्व को बाजार बना दिया गया है। गर्भाशय को चमड़े की थैली बनाकर बाजार में उतार दिया गया है। ऊषा देवी कोल्हटकर ने यहाँ सिंडी जैसी मद्यालय में काम करने वाली वेश्या को सरोगेट मदरहुड प्रदान करने से अमेरिकी समाज तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर कटाक्ष किया है।

2. गौतम सचदेवा :

प्रवासी भारतीयों की चेतना का विकास द्वन्द्वात्मक परिस्थितियों में हुआ है, जिसके फलस्वरूप वह एक तरफ पश्चिमी संस्कृति में अपनी संभावनाओं को खोजता है तो दूसरी तरफ भारत में अपनी जड़ों को। गौतम सचदेव इंग्लैंड में बसे एक ऐसी प्रवासी कथाकार हैं, जिनके कथा–साहित्य के माध्यम से प्रवासी भारतीय नारी के मन की विभिन्न गुत्थियों को समझने में मदद मिलती है।

गौतम सचदेव ने अपनी कहानी 'लम्बोतरे मुँह वाली लड़की' में कटु दाम्पत्य संबंधों में जीने वाली नारी पात्र को उकेरा है। सिमी की शादी एलिस्टर नामक लंदनवासी से होती है। पति–पत्नी के संबंध में अपनापन नहीं बल्कि परायापन है। सिमी शादी करके अच्छी जिंदगी जीने और शानदार नौकरी के सपने लेकर आती है। लेकिन लंदन की संस्कृति में स्वयं को ढाल नहीं पाती है।

'मौसम, सड़कें, ट्रैफिक, मकानों की छतें और दीवारें, पेड़–पौधे, अपरिचित चेहरे बनाए रखने वाले भिन्न रूप–रंग वाले लोग। हैच एण्ड के जिस क्षेत्र में एलिस्टर का मकान था, वहाँ अधिकांश लोग अंग्रेज थे। वह पड़ोसियों से परिचय बढ़ाना चाहती थी, लेकिन कोई उससे बोलता नहीं था।' वह एलिस्टर के जीवन में रच–बस जाना चाहती थी, लेकिन पैसों की बात छिड़ने पर एलिस्टर ने खुद को बिल्कुल अलग खड़ा कर दिया था। एलिस्टर ने कहा था– डार्लिंग, तुम्हें माँ–बाप से जो पैसे मिले हैं, वे तुम्हारे हैं। तुम यहाँ जो कमाओगी, वह भी तुम्हारा होगा। ऑफ कोर्स हम सारे खर्चे शेयर करेंगे, लेकिन अपना–अपना शेयर कन्ट्रिब्यूट करके। सिमी एलिस्टर का चेहरा देखती रह गई थी। वह उसकी नीली आँखों में झांक कर इस कथन का आशय समझने की कोशिश कर रही थी। क्या यह परायापन नहीं है? साथ रहते हुए भी अलगाव नहीं है?

सिमी ने कहा–'लेकिन हमारे कल्चर में'। एलिस्टर ने उसे बीच में ही टोक दिया था–मैं समझता हूँ और तुम जानती हो, कि मैं तुम्हारी कल्चर का कितना सम्मान करता हूँ। डार्लिंग, यहाँ तो वह कल्चर नहीं है न। यहाँ तुम्हारी पर्सनैलिटी और आइडैण्टिटी यहाँ के कल्चर में स्थापित होनी चाहिए। यह उचित भी है और आवश्यक भी।'

सिमी समझौते की नीति पर चलती है लेकिन एलिस्टर इस समझौते को कहाँ तक निभाता। वह तो सिमी को 'कामसूत्र' और 'खजुराहो' की धरती की उपज समझता है। एलिस्टर सिमी को गले पड़ा ढोल समझने लगता है।

सिमी सोचती है 'यदि भारत में होती, तो दूसरों की जिंदगी से सरोकार रखने वालों से जरूर कुछ सुनना पड़ता, लेकिन यहाँ तो कोई कहने–सुनने वाला भी नहीं था। माँ जरूर कभी–कभी फोन पर पूछ बैठती, क्या कर रही हो सिमी।' वह सोचती रहती, अगर एलिस्टर मुझे छोड़ दे, तो मैं कहाँ जाऊंगी? क्या वापस चली जाऊँ? फिर सोचती, भारत जाकर क्या करुँगी? लेकिन तब भी हल क्या?' क्या मेरा गुजारा अनुवाद की जरा–सी आय से हो सकेगा? खाने का तो मान लो, हो भी जाएगा, लेकिन घर का किराया कहाँ से लाऊँगी? अकेले रहूँगी कैसे? कहाँ जाऊँ? तब क्या मुझे उम्र कैद मिली है। एक पराए द्वीप में? नहीं। मैं कैदी नहीं हूँ।

(लम्बोतरे मुँह वाली लड़की, गौतम सचदेव)

गौतम सचदेव ने दाम्पत्य के कटु संबंधों में जीने वाली सिमी के माध्यम से विदेश में रहने वाली नारी की विडम्बना को चित्रित किया है, जो अपनी संस्कृति और विदेशी सांस्कृतिक संवेदना को समायोजित नहीं कर पाती।

3. दीपिका जोशी संध्या :

दीपिका जोशी कुवैत में रह रही ऐसी प्रवासी रचनाकार हैं जो अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री की समस्या को केंद्र में लाने की कोशिश करती रहती हैं। 'कच्ची नींव' कहानी में लेखिका ने कटु दाम्पत्य संबंधों में जीने वाली नारी पात्र का उल्लेख किया है। इस कहानी में नेहा और अजय दो प्रमुख पात्र हैं जो अपने परिवार को बिना बताए अंतर्जातीय प्रेमविवाह करते हैं। अजय अपनी मेहनत के बल पर मजदूर से व्यवसायी बन जाता है। अपने व्यवसाय की उचित देखभाल के लिए वह भारत से अपने भाई विजय को बुला लेता है। अपने व्यवसाय में अत्यधिक व्यस्त होने के कारण अजय–नेहा को अधिक समय नहीं दे पाता है। 'इस साल जब अजय–नेहा की शादी की सालगिरह आई तो बड़ी अजीब घटना घटी। हमेशा विजय को साथ लेकर चलने वाला अजय इस सालगिरह के दिन सिर्फ बच्चों को साथ लेकर घूमने जाना चाहते थे। अजय इस बात को लेकर सहमत नहीं था, पर नेहा का दिल रखने के लिए तैयार हो गया।' शाम को नेहा ने बेटियों को तैयार करना शुरू कर दिया, खुद भी अच्छे कपड़े, गहने से सज–संवर कर तैयार हो गई और कहीं बाहर गए अजय की राह देखने लगी। जब अजय आया तो नेहा को देखता रह गया। खुशी में बाहर निकल रहे ही थे कि विजय ने टोक दिया, 'मैं भी साथ चलूँगा।' नेहा अजय की तरफ देखने लगी। इस उम्मीद से कि वह जवाब में कुछ कहेगा। लेकिन उसने चुप्पी बनाए रखी। दिल पर पत्थर रखकर नेहा को कहना पड़ा कि आज के दिन सिर्फ हम ही घूमने जाना चाहते हैं। अजय का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। अजय ने बिना सोचे–समझे नेहा को ही भला–बुरा कहा। हँसी–खुशी का माहौल एक मिनट में गमगीन हो गया। बेटियाँ सहम गईं। नेहा कमरे में जाकर रोने लगी। अपने हक की शाम अपने ढंग से मनाने की उम्मीदों पर पानी फिरा और रात को नेहा को भूखे पेट सोना पड़ा।'

अजय के व्यवहार से नेहा पूरी तरह ऊब चुकी थी। उसने कुछ दिन के लिए भारत घूम आने का फैसला किया और अजय ने

नेहा को भारत भेज दिया। 'जब तीसरे दिन भी नेहा नहीं लौटी तो लोगों ने बातें बनानी शुरू कर दी। तीन दिन के हफ्ते और हफ्तों के महीने बीत गए पर नेहा वापिस नहीं लौटी। लौटे तो सिर्फ तलाक के कागजात। कहते हैं, नेहा ने बच्चियों को अपने पास रखने से मना कर दिया। निशा सोच रही थी–अगर ये भारत में होते तो क्या बुजुर्ग इस हँसते–खेलते परिवार को इस तरह बिखर जाने देते? क्या अलग होकर नेहा उस खुशी की तलाश कर पाएगी जिसके लिए पहले पिता और फिर पति का घर छोड़ कर गई है। क्या पुरुष पत्नी के त्याग को हमेशा उसका कर्त्तव्य समझते रहेंगे।' (कच्ची नींव, दीपिका जोशी)

वास्तविकता में आज स्त्री अपने और पति के मध्य किसी तीसरे की मौजूदगी बर्दाश्त नहीं करती है, चाहे वह भाई हो, माँ हो अथवा कोई और संबंधी। संबंधों की परिभाषा बदल रही है। ऐसे में नेहा जैसी उन्मुक्त विचारों की आधुनिक लड़की भी विदेशी संस्कृति में स्वयं को सहज नहीं बना पा रही है। दीपिका जोशी ने प्रश्नों की झड़ी लगाकर हमारे समक्ष बिखरते दाम्पत्य संबंधों के मध्य बच्चों के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगाया है।

4. अनिल प्रभा कुमार :

कथाकार अनिल प्रभा कुमार की कहानियों की यह विशेषता है कि आपकी कहानियों में नारी की महत्त्वकांक्षा और त्रासदी की पीड़ा को झेलता हुआ परिवार उपस्थित है। 'घर' कहानी की नादिरा हो या 'तीन बेटों की माँ' की बहू अमला या 'दीवाली की शाम' की श्री ये तीनों अपनी–अपनी महत्त्वकांक्षा की शिकार हैं। ये तीनों महत्त्वकांक्षी नारी पात्र हैं।

नादिरा की महत्त्वकांक्षा में आधुनिक पति की तस्वीर है। परन्तु यथार्थ में उसका पति ढीला–ढाला सा और बोरिंग, उबाऊ और नीरस है। वह पर पुरुषों में दिलचस्पी रखने लगती है। उसके बेटे सलीम को मॉम का व्यवहार अखरने लगा। 'जब कभी वह मालिनी के घर होमवर्क करने जाता तो मालिनी की मॉम तो चाय पीने के बाद मालिनी के डैड को सैर पर चलने का आमंत्रण देती।' एक शाम उसके लिए अविस्मरणीय बन गई थी। शाम का धुंधलका था। मॉम और महेश अंकल डैड पर झुके, हल्के–हल्के हँस रहे थे, उनका इतना पास सटकर खड़े होना, यूँ एक–दूसरे को देखना उसे खला था। उसने पीछे से जाकर जब मॉम का कंधा थपथपाया तो मॉम एकदम वार करने की मुद्रा में थी। 'अब क्या चाहिए?' जिस आवाज में दांत पीसते हुए और जिन नजरों से उसे देखा था वह क्षण जैसे वहीं का वहीं ठहर गया। वह एक क्षण लक्ष्मण रेखा बन गया–माँ और बेटे के रिश्ते के बीच, सलीम के किशोर से व्यस्क होने के बीच।'

(घर, अनिल प्रभा कुमार)

नादिरा अपने पति और बच्चे को छोड़कर चली जाती है। बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से यह कहानी काफी सधी हुई मानी जाएगी। लेखिका ने इसके त्रासद परिणाम उपस्थित के यह बतलाने का प्रयास किया है कि पति–पत्नी के झगड़ों का प्रभाव उसकी संतान पर किस तरह पड़ता है कि वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। इतना ही नहीं सलीम को मनोचिकित्सक की सलाह है कि वह चिड़ियाघर के जीव–जंतुओं के साथ रहे। नादिरा की महत्त्वकांक्षा ने न केवल उसके घर को बिखेर दिया बल्कि अपनी ही संतान को चिड़ियाघर का एक जंतु बना दिया।

'तीन बेटों की माँ' की अमला की महत्त्वकांक्षा ने उसे अमरीका पहुँचा दिया और ऐसे में उसकी सास तभी तक उपयोगी रहती है, जब तक उसके बाल–बच्चे छोटे हैं और वह बेबी–सिटर के महंगे खर्च को बचा पाती है। इसके बाद तो सास सत्या एक अनचाहे सामान की तरह हो जाती है। आश्चर्य तो तब होता है जब अमला सत्या के लिए अलग से सस्ता साबुन लाती है और अपने लिए दूसरा, जिसे सत्या छू भी नहीं पाती। 'सत्या ने अपनी लांड्री खुद करने के लिए मशीन में कपड़े डाले, पास रखे साबुन के डिब्बे से साबुन भरा ही था कि अमला ने उसे देख दिया। बेधता हुआ प्रश्न किया, आपने साबुन कहाँ से निकाला?'

सत्या ने डिब्बे की ओर इशारा किया।

'आपको पता नहीं कि यह बढ़िया कपड़े धोने के लिए साबुन है, आपके गूदड़ धोने के लिए नहीं।'

अपमानित सी सत्या एक तरफ खड़ी हो गई। बाहर के लोगों के सामने इतनी पढ़ी–लिखी, कमाऊ, मिलनसार और मेहमानवाज अमला ने एक मुट्ठी भर साबुन के चूरे के लिए उसका पानी उतारकर रख दिया।

सत्या बस सोचती रह गई कि कहाँ जाए? उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा तो प्रकाश और उसकी गृहस्थी की देखभाल में बीत गया।

'एक दिन तो अमला ने हद कर दी। मैं तंग आ गई हूँ तुमसे! आखिर अमला ने साफ उसके मुँह पर कह दिया। जब से ब्याही आई हूँ, आप हमेशा मेरे साथ चिपकी रहती हो।' हर वक्त कोई प्राइवेसी नहीं है मेरे इस घर में–अपने पति और बच्चों के साथ।

'अगर प्रकाश के बाबू जी आज जिंदा होते तो तुम लोगों को कभी मेरा बोझा नहीं पड़ता' सत्या बेचारगी से रोने लगी। संवेदना का वृत्त तब चरमराकर टूटने लगता है जब भारत से वापस अमरीका आई हुई सास के सामान को अमला बाहर ड्राइव–वे पर फैंक देती है। उसके वर्चस्व के समक्ष उसका पति प्रकाश बौना प्रतीत होने लगा है क्योंकि 'घर' अमला की महत्त्वकांक्षा का परिणाम है।'

(घर, अनिल प्रभा कुमार)

कथाकार नारी की संवेदना को उरेहने और उकेरने में सफल है। अमला जब सास के सामान को बाहर ड्राइव वे पर फेंकती है तो उसमें कुछ टूटने की आवाज आती है। सत्या भारत से अपने पोते मानिक के लिए भारत से उसकी पसंदीदा रूहअफजा की बोतल लाई है। बोतल का टूटना पारिवारिक संबंधों का टूटना है।

5. डॉ. कृष्ण कुमार :

कृष्ण कुमार की रचनाएँ विभिन्न लोगों के संबंध से ज्यादा प्रेरित हुई हैं। वे एक ऐसे कहानीकार हैं जिनकी कहानियाँ भारतीय सोच से यू.के. के समाज को कथा का केंद्र बनाते हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीय पर **पाश्चात्य रंग का प्रभाव** पड़ जाता है। इसी तथ्य को अपनी कहानी 'नो फ्रेशी प्लीज़' में अभिव्यक्त किया है। जहाँ एक माँ को दिखाया गया है जो बेटे के कहे शब्द 'नो फ्रेशी प्लीज' के प्रति आशंकित रहती है। बर्मियम में

रह रहे भारतीय मूल के साइरस के लिए 'लैपटॉप' जीवन साथी की तरह हो गया है, साइरस द्वारा कहे गए फ्रेशी शब्द का अर्थ न तो उसकी माता जानती है न पिता, न ही वहाँ के कोई जान पहचान वाले लोग। साइरस इसका अर्थ बताते हैं कि–माँ, फ्रेश के अर्थ हैं–'ताजी' और आई के माने हैं 'इंडिया' मतलब 'सीधे भारत से आई लड़की मुझे नहीं चाहिए।'

इसके अतिरिक्त लेखक ने **पाश्चात्य संस्कृति को ओढ़ने वाले नारी पात्र** पर कटाक्ष किया है।

'संकल्पा ने टी.वी. की आवाज बढ़ा दी थी।' आज के दृश्य में दिखाया जा रहा था कि कल्पना और अमजद की बेटी आइशा को सैंट्रल लंदन से किसी ने अगवा कर लिया है। दोनों चीख मार–मारकर अपनी बेटी को खोज रहे हैं। छोटे बच्चों की इस प्रकार की चोरी यू.के. के समाज के लिए समस्या बन गई है–क्योंकि औरतों को हमेशा माँ स्वरूप बनने की स्वाभाविक इच्छा तो होती है, किन्तु पाश्चात्य देशों की बदलती संस्कृति के अनुसार वह पूरे नौ महीने कष्ट उठाए बच्चा अपनी गोद में चाहती है। इस तरह छोटे बच्चों की चोरी का काम मुख्यतः मानसिक रोग से पीड़ित औरतें ही करती हैं।

(नो फ्रेशी प्लीज, डॉ. कृष्ण कुमार)

6. ऊषा वर्मा :

ऊषा वर्मा की कहानियों का फलक विस्तृत है। वर्मा की कहानियों में रिश्ते–नाते, स्त्री–पुरुष, देशी–विदेशी सभी को वस्तुगत स्थिति में रखकर जाँचने–परखने का प्रयास किया है। 'सलमा' कहानी में कटु दाम्पत्य संबंधों में जीने वाली नारी पात्र की स्थितिजन्य विवशता को दर्शाया है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की उपेक्षा, अपमान और यातना को उभारते हुए स्त्री–मन की अंतर्दशाओं का संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

'यह कहानी नायिका सलमा की है। हकीकत की सलमा तो रोज रोती है जमीर से उस गोरी लड़की को छोड़ने की बात कहकर रोज मार खाती है, बेगुनाह सलमा गुनहगार है, जमीर सजा काटकर आया है।'

'सलमा की आँखों में सपना था विदेश के तमाम किस्से सुनती थी। खाला के घर जब उतरी तो उसे लगा यह तो एक नई दुनिया है। न कहीं बहते नाले हैं, न गंदा पानी, सब कुछ चमकता हुआ। सब कुछ इतने करीने से था कि उसे डर लगता, कहीं कुछ खराब न हो जाए। हर कदम संभलकर रखती, उसके अपने दिल में पनपना। अनजाना प्यार का पौधा, भाई–बहन, अम्मू–अब्बू सब कुछ गड्डमड्ड होने लगा। खाला की सहेली कह रही थी कि उसका लड़का बिना साथ रहे शादी नहीं करेगा। सलमा के मन में कसक सी उठती है, शायद वह देखने में वहाँ की लड़कियों की तरह नहीं होगी। वह जाकर शीशे के सामने खड़ी हो जाती है। साथ रहने पर मुझे देख ही तो सकते हैं बाकी तो मैं जितना चाहूँ अपने को छिपा सकती हूँ।' सलमा का विवाह जमीर से कर दिया जाता है।

नारी पर अत्याचार करने वाले पात्र में सलमा की सास महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'सलमा का मन होता कि वह जमीर के साथ कहीं घूमने जाए, लेकिन सास कभी उसे जाने को कहती नहीं थी। जमीर की जेब से लड़की की फोटो निकलने पर सलमा को लगने लगा कि वह हर तरफ से हार गई थी। घर छूटा, माँ–बाप, भाई–बहन सबको छोड़कर यहाँ आई थी। सास बोली–कोई मुसीबत की बात तो नहीं है मर्द जात तो रहते ही इसी तरह हैं। सलमा को धक्का लगा।'

''सलमा ने हिम्मत करके जमीर से शिकायत की लेकिन वह उसके तेवर देखकर दंग रह गई। वह बोला–'मैं उसे घर लाकर नहीं रखता ये क्या कम है। खबरदार अगर आज से कुछ कहा। तुम्हें खाना–कपड़ा मिलता रहे यह क्या कम है। सलमा ने काँपते हुए पूछा, क्या हाजी साहब के सामने भी तुम ऐसी बात कह सकते हो। जमीर ने कहा–तुम किस घमंड में हो, उन्हें सब कुछ मालूम है। सलमा को आज अहसास हुआ कि कुछ दुःख ऐसे भी होते हैं जो न मरने देते हैं न जीने।'

सलमा सोच रही थी 'इस घर के दरवाजे बंद हैं और वह इस घर की दीवारों को कभी भी न लाँघ पाएंगे? वह हर समय सोचती कि उसके पास कौन सी ताकत है, वह तो आठवीं तक पढ़ी है। अकेली कहाँ रहेगी?'

'स्त्री चाहे भारतीय हो अथवा दूसरे समाज की, पुरुष वर्चस्व वाला समाज उसके साथ एक जैसा व्यवहार करता है। अपने लिए असीमित अधिकार रखने वाला जमीर सलमा से समर्पण और मौन की माँग करता है। सलमा पति की आदतों और घरेलू परिस्थितियों से तंग आकर खुदकुशी का ख्याल मन में लाती है। मुक्ति की आकांक्षा, असुरक्षा का भय उसे किसी परिणति तक नहीं पहुंचा पाती।'

वस्तुतः कहा जा सकता है कि इन कहानियों में टकराव की विभिन्न मुद्राएँ हैं–एक ही छत के नीचे परस्पर विरोधी जीवन शैली में जीते लोगों के मध्य टकराव, अंतरंग संबंधों के बिगड़ते समीकरणों का तनाव, अपने फैसले पराए हाथों में होने की पीड़ा और किसी बेहद करीबी रिश्ते के बहुत दूर जाने की विवशताएँ दिखाई पड़ती हैं, प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी साहित्य रचनाओं में नारी मन की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। सलमा, सिमी पात्र निर्णय न लेने के लिए अभिशप्त है। विदेश में भारतीय नारी पात्रों की विवशता साफ झलकती है। संवेदनशील समाज में संवेदनशील पुरुष के साथ रहने और छोड़ कर जाने का प्रश्न निरंतर बना हुआ रहता है। सलमा, सिमी निर्णय लेने में समर्थ नारी पात्र हैं, लेकिन भविष्य की आशंका उन्हें समझौता करने के लिए मजबूर करती है। विदेशी संस्कृति में स्वयं को 'एडजस्ट' न कर पाने के कारण उन्हें ही दोषी स्वीकार किया जाता है। इसके विपरीत अमला, नादिरा, नेहा, सिंडी जैसे नारी पात्र अपने फैसले स्वयं लेने में तत्पर रहते हैं। अपनी महत्त्वकांक्षा पूर्ति के फलस्वरूप नादिरा, नेहा अपने दाम्पत्य संबंधों को ताक पर रखकर स्वतंत्र जीवन जीने के लिए चल पड़ती है। माता–पिता के प्यार के अभाव में नादिरा के बेटे का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है, इसके विपरीत अजय और नेहा के आपसी संबंधों में टकराव के फलस्वरूप नेहा की बेटियों के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। ऐसे लगता है जैसे रचनाकारों ने पहचान कर ली है कि महत्त्वकांक्षा का नाम है, विदेश, जिसमें नारी पात्रों में वैभव विलास की संभावना शामिल हो जाती है या फिर अपनी पहचान की। यह लालसा इतनी अधिक बढ़ जाती है कि पारिवारिक जीवन को तहस–नहस कर देती है।

स्वतंत्रता की परिचायक नेहा, नादिरा या सिंडी हो अथवा दाम्पत्य संबंधों में समझौता करने वाली सलमा, सिमी पाश्चात्य संस्कृति में एडजस्ट दोनों ही तरह के नारी पात्र नहीं कर पा रहे हैं। दोनों की तरह के पात्र अपने दाम्पत्य संबंधों की टूटन–बिखराव की स्थिति को झेल रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि प्रवासी

साहित्यकारों ने पूरे मनोयोग से नारी मन को पढ़ने की सफल चेष्टा की है।